(ii) Need for establishment of Powerful Radio Stations at Barmer and Jaisalmer in Rajasthan.

श्री वृद्धि चन्द्र जैन (बाड़मेर) : उपाध्यक्ष महोदय, केन्द्र सरकार ने रेडियो प्रसारण की दृष्टि से राजस्थान प्रान्त के सीमावर्ती एवं पिछड़े लोक-सभा निर्वाचन क्षेत्र बाड़मेर एवं जैसलमेर, जिसका क्षेत्रफल 70 हजार वर्ग किलोमीटर है, जो केरल प्रान्त से दूगनी और हरियाणा प्रान्त से ड्योढ़ा है, की घोर अपेक्षा कर रखी है।

आल इंडिया रेडियो के दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, कोटा, सूरतगढ़ एवं बीकानेर स्टेशनों की आवाज उक्त क्षेत्र के आधे हिस्से में मन्द पहुंचती है और आधा क्षेत्र रेडियो प्रसारण की सेवाओं से वंचित रहता है।

चौथी एवं पांचवी पंचवर्षीय योजना में बाड़मेर एवं जैसलमेर रेडियो स्टेशन स्थापित करने का प्रस्ताव था, परन्तु वित्तीय कठिनाई का सहारा ले कर उक्त प्रस्ताव को क्रियान्वित नहीं किया गया। छठी पचवर्षीय योजना में भी प्रस्ताव था परन्तु इसके बाद में कोई राशि का प्रावधान नहीं रखा गया है और उक्त क्षेत्र की घोर उपेक्षा की जा रही है उक्त क्षेत्र पाकिस्तान की सीमा पर आया हुआ है, उक्त क्षेत्र देश का प्रहरी है, परन्तु उक्त क्षेत्र की जनता के मनोबल को ऊंचा उठाने के लिए रेडियो प्रसारण की सेवाओं का लाभ भी केन्द्र सरकार द्वारा नहीं पहुंचाया जा रहा है। युद्ध के समय में जब कि सीमावर्ती जनता का मनोबल बढ़ाना आवश्यक होता है, रेडियो प्रसारण इस सम्बन्ध में बड़ी भूमिका अदा करता है और शान्ति के समय में देश की प्रगति की जानकारी दे कर उन्हें सच्चे एवं निर्भीक नागरिक बनाता है।

अतः सूचना एवं प्रसारण मंत्री का ध्यान आकर्षित कर निवेदन है कि इस प्रश्न को न्यूनतम आवश्यकता का प्रश्न मानकर प्राथमिकता के आधार पर इसी वर्ष बाड़मेर एवं जैसलमेर में क्रमशः बड़ी शक्ति के रेडियो स्टेशन स्थापित कर सीमावर्ती जनता की आवश्यक मांग की पूर्ति करें।

(iii) Ashok Paper Mills Darbhanga (Bihar)

श्री रामविलास पासवान (हाजीपुर) : बिहार के दरभंगा जिले में एक अशोक पेपर मिल्स है जिस का मुख्य कार्यालय एवं यूनिट आसाम में है। बिहार यूनिट 1978 में तथा आसाम तथा 1976 में चालू हुआ। इन दोनों यूनिटों का उद्देश्य पिछड़े इलाके का विकास करना एवं रोजगार मुहैया कराना था। अशोक पेपर मिल्स बिहार का उत्पादन 40 टन प्रति दिन है। तथा आसाम का 90 टन प्रतिदिन का है। लेकिन समय पर बिजली तथा कच्चा माल उपलब्ध नहीं होने के कारण एवं सही निर्देशन के अभाव में अशोक पेपर मिल्स बिहार एवं आसाम यूनिट अपनी उत्पादन क्षमता के मुताबिक उत्पादन करने में असमर्थ रहा और 1980 तक आते-आते क्षमता के अनुपात में आधे से भी कम उत्पादन होने लगा। फलस्वरूप मिल के सामने वित्तीय संकट आ गया तथा सितम्बर, 1982 में उत्पादन कार्य बन्द हो गया। 1982 अगस्त में उद्योग मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने बिहार, आसाम, आई. डी. बी. आई. एवं अन्य वित्तीय संस्थानों की बैठक लाई। लेकिन अभी तक समस्या का निदान नहीं हो सका है। करीब ढाई हजार श्रमिक परिवारों के सामने भुखमरी की स्थिति है। अरबों रुपये की मशीनों में जंग लग रहा है। आसाम की सरकार किसी भी शर्त पर मिल को चलाना चाहती है, जब कि बिहार सरकार की नीति उपेक्षापूर्ण है। केन्द्रीय सरकार की उदासीनता से बिहार एवं आसाम के लोगों में काफी क्षोभ है।

अतः केन्द्रीय सरकार से मांग है कि सरकार अविलम्ब अशोक पेपर मिल्स को अपने हाथ में ले कर हिन्दुस्तान पेपर कारपोरेशन के माध्यम से इस का उत्पादन चालू कराये जिस से बिहार एवं आसाम का विकास हो सके। हजारों मजदूरों को भुखमरी से बचाया जा सके तथा अरबों की मशीनों को बरबाद होने से बचाया जा सके।